Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 3 | ISSUE : 6 | JUNE 2017

बिहार के रोहतास जिले में कृषि श्रमिकों की आर्थिक दशाएं : एक भौगोलिक अध्ययन

प्रो. प्रशान्त कुमार भारती [1] | **प्रो. विद्या शंकर** [2]

[1] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, सी.एस.आर. महाविद्यालय, पीपरताराई, कोटा, बेलासपूर

[2] सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, बाबा गणी नाथ महाविद्यालय, जमुहार, रोहतास, बिहार

ABSTRACT

Keywords:

परिचय

कृषि भारतीय समाज का मेरुदंड है कुल जीडीपी की लगभग 17.4 प्रतिशत आय कृषि से ही हो रही है तथा जनसंख्या का 2/3 से अधिक भाग कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियों में लगा हुआ है। इसके बावजूद भारतीय कृषि विभिन्न समस्याओं से जूझ रही है। इनमें किसानों की ऋणग्रस्तता, गरीबी, उन्नत बीजों का अभाव उर्वरक की कमी, सिंचाई सुविधाओं का अभाव, कृषि श्रमिकों का आर्थिक स्थिति मुख्य है, परंतु इन सब में कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय है। यहां पर कृषि श्रमिकों का तात्पर्य गांव में रहने वाले उन व्यक्तियों से है जो कृषि के कार्य मजदूरी के रुप में करते हैं। इसमें विभिन्न प्रकार की कियाए आती हैं। जैसे फसलों की बुवाई, जुताई, कटाई, गाय भैंस पालना, बागवानी करना इत्यादि शामिल है। अपनी जीविका के लिए अधिकांश मजदूरी पर ही निर्भर रहते हैं। जनगणना रिपोर्ट 1961 के अनुसार कृषि श्रमिक वह व्यक्ति है जो केवल श्रमिक की भांति दैनिक मजदूरी लेकर या कार्य के बदले फसलों में से एक भाग अपनी मजदूरी क बदले में लेता है। भूमि के संबंध में उसका कोई अधिकार नहीं होता है और ना ही फसलों के बुवाई में किसी प्रकार का निर्णय लेने का अधिकार होता है। इन श्रमिकों को कार्य पूरे वर्ष में कुछ महीने ही मिलते हैं, बाकी समय वह बेकार रहते हैं जिससे उनकी आर्थिक स्थिति बद से बदतर होते जा रही है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य रोहतास जिले के कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति से अवगत होना तथा इनके आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए इलके समस्याओं का वि" लेशण करना है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के लिए संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का सहारा लिया गया है साथ ही साथ रोहतास जिले के कृषि कार्य में संलिप्त किसानों, कृषि श्रमिकों से पूछताछ कर उनकी स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं तथा इंटरनेट द्वारा भी कुछ मानचित्र इकट्ठा किया गया है तथा इससे जुड़े विभिन्न पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का भी सहारा लिया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

रोहतास जिला पटना प्रमंडल में बिहार राज्य के मध्य पश्चिमी भाग में स्थित है। आजादी के बाद रोहतास जिला पुराने साहाबाद जिले का एक भाग था जो 1972 मे अलग होकर रोहतास जिला बना। यह शाहाबाद का दक्षिणी भाग था इसके पश्चात 1995 में रोहतास जिले के पि" चमी भाग को अलग कर एक और नया जिला कैमूर जिला बनाया गया। इसके पश्चात रोहतास जिले का अक्षांशीय विस्तार 24°20' से 25°20' उत्तरी अक्षांश तथा 83°14' से 83°20' पूर्वी देशांतर तक है। इस इस जिले का समुद्र तल से ऊंचाई 107.78 मीटर है जबकि इसका क्षेत्रफल 3847.82 स्क्वायर किलोमीटर है। 1995 के बाद इस जिले का नया चौहदी तैयार हुआ जो इस प्रकार है उत्तर में भोजपुर और बक्सर जिला, दक्षिण में पलामू और गढ़वा जिला, पूर्व में औरंगाबाद और गया जिला का कुछ भाग और पश्चिम में कैमूर जिला है। 2011 के जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 2962593 थी जिसमें 1547856 पुरुष तथा 1414737 महिला थी।

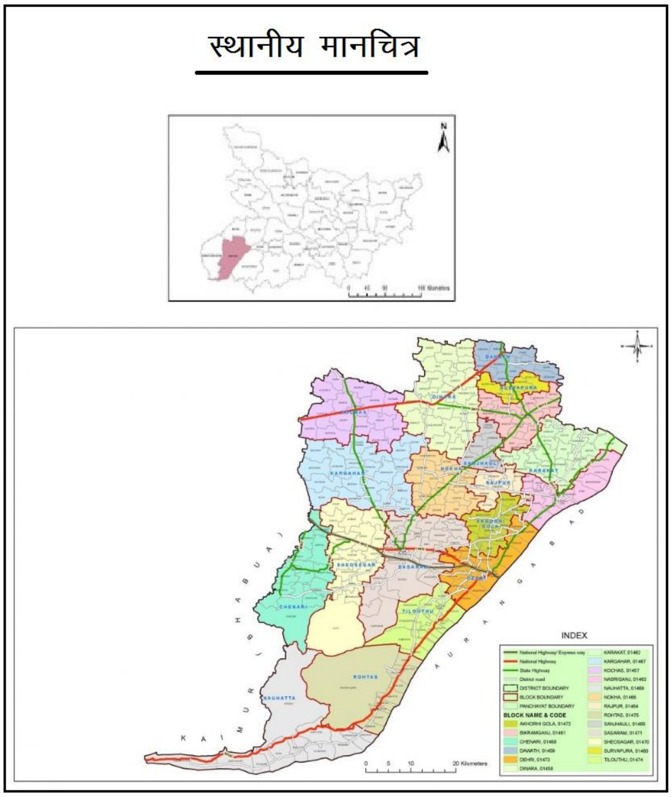

चित्र – 1

कृषि श्रमिकों का आर्थिक स्तर

कृषि क्षेत्र विशेष के कृषि श्रमिक परिवारों के आय–व्यय का विश्लेषण करना श्रमिकों की आर्थिक व्यवहार की श्रेणी में माना जाता है। किन्तु इनका अध्ययन करना बहुत कठिन है, क्योंकि कृषि श्रमिक साक्षात्कार के समय अपनी आय–व्यय का हिसाब बताने में सक्षम नहीं होते तथा अशिक्षा और अज्ञानता के कारण विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आय–व्यय की सही से जानकारी नहीं दे पाते हैं। अनियमित रोजगार, शोषण से ग्रस्त मजदूरी इत्यादि का वार्षिक लेखा–जोखा नहीं रख पाने की आदत के कारण आय–व्यय विश्लेषण प्रभावित होता है। लेकिन कृषि श्रमिकों की आर्थिक दशा के अध्ययन के लिए परिवार के मुखिया एवं अन्य सदस्यों से सामूहिक साक्षात्कार करने से इनका आय–व्यय का सही जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है जिसे तालिका संख्या 1 में आय वर्ग के अनुसार दर्शाया गया है।

तालिका 1

रोहतास जिला के सर्वेक्षित गाँवों में कृषि श्रमिकों के परिवार का % मासिक आय वर्ग

क्र0	मासिक आय वर्ग	कुल कृषि श्रमिकों के परिवार का %
1.	2000 से कम	16.22
2.	2000 से 2400	15.74
3.	2400 से 2600	14.69
4.	2600 से 2800	13.26
5.	2800 से 3000	8.96
6.	3000 से 3400	7.05
7.	3200 से 3400	7.16
8.	3400 से 3600	3.90
9.	3600 से 3800	3.82
10.	3800 से 4000	1.70
11.	4000 से 4200	2.68
12.	4200 से अधिक	4.77

स्रोत – कार्य क्षेत्र के आधार पर

कृशि श्रमिको के आय के प्रमुख साधन

कृशि श्रमिक गावं में आर्थिक दश्टि से सबसे निचली पौदान पर है। गाँवों के लोगों का सामाजिक स्तर, भूमि एवं जाति के साथ जुड़ा होता है, जो उनकी हैसियत, आर्थिक भाक्ति तथा राजनीतिक प्रभाव को बताता है। कृशि श्रमिक साधारणतः आार्थिक एवं सामाजिक दृश्टि से पिछड़े वर्ग तथा जनजातियों के लोग हैं, क्योंकि इस जिले में भी अन्य क्षेत्रों की तरह कृशि श्रमिक के रुप में अनुसूचित जातियों से अधिक कृशि श्रमिक आते हैं। रोहतास जिले में कृशि श्रमिक के रुप में इस वर्ग में 73.5% लोगों को रोजगार मिलता है जिनमें 18% से अधिक लोग अनुसूचित जनजाति के खेतिहर मजदूरो की आर्थिक स्तर का वास्तविक आंकलन तब तक संभव नहीं है, जब तक कृशि मजदूरों की आय के विभिन्न साधनों की जानकारी प्राप्त न हो, हालाँकि राश्ट्रीय स्तर पर कृशि मजदूरों की आय प्राप्ति के साधनों में बहुत कुछ एकरूपता पायी जाती है। किन्तु क्षेत्रीय **विशेषताओं** के चलते रोजगार के भिन्न–भिन्न अवसरों के कारण कृशि श्रमिक अपनी बेरोजगारी के दिनों में आय अर्जित करने का प्रयास करते हैं। कृशि श्रमिकों के आय का मुख्य साधन खेतों मे काम करने से प्राप्त मजदूरी है। संसाधन युक्त कृशि श्रमिक अपनी थोड़ी आय कृशि जोत से भी प्राप्त करते हैं। कुछ कृशि श्रमिक पशुधन से भी आय अर्जित करते हैं, किन्तु इनकी संख्या नगण्य होती है। कृशि श्रमिक बेरोजगारी के दिनों में भाहरों की ओर प्रवास कर आय अर्जित करने का प्रयास करते हैं।

मुख्य रूप से हर उन कार्यों में जो **अकुशल** श्रम प्रधान होते हैं, ये अपना श्रम बेचने का प्रयास करते हैं, जैसे – ठेला चलाना, बोझ ढोना, **रिक्शा** चलाना, सड़क निर्माण, लकड़ी बेचना, भवन निर्माण, पुल निर्माण इत्यादि। इसके अलावा कुछ कृशि श्रमिक परिवारों की आय बाल श्रम की पूर्ति से भी होता है। इस क्षेत्र में **विशेष** रूप से जानवरों की चराई के लिये बालश्रम ही मुख्य रूप से नियोजित किया जाता है। कुछ **कशल** श्रेणी के कृशि श्रमिक कारीगर अपने कार्य **विशिष्टीकरण** के कारण बेकारी के दिनों में उन **विशेष** कार्य के सम्पादन से कुछ आय अर्जित करने मे सफल होते हैं।

उपर्युक्त व्यापक पृश्ठभूमी में रोहतास जिले के अध्ययन हेतु चयनित गाँवों के सर्वेक्षण से प्राप्त आय के साधनों का स्वरूप तालिका 2 में स्पश्ट किया गया है–

तालिका 2

रोहतास जिला में कृशि श्रमिकों की आय के प्रमुख साधन (% में)

क्र0	आय के साधन	प्रतिशत
1.	कृशि मजदूरी	73.2%
2.	सड़क और भवन निर्माण, कुली कार्य	7.1%
3.	रिक्सा एवं ठेला चलाना	10%
4.	पशुचारण (पशु बिक्री)	4%
5.	अन्य (शिल्प, कारीगरी इत्यादि)	5.7%
	योग	100%

स्रोत – कार्य क्षेत्र के आधार पर

तालिका संख्या 2 के **विश्लेषण** से यह स्पश्ट है कि भाहरी क्षेत्रो में वैकल्पिक कार्यों की उपलबधता एवं आवागमन की सुविधा मिलने के कारण निकट के ग्रामों के कृशि मजदूर अपने बेकारी के दिनों में दुसरे कार्यों से आय अर्जित करने का प्रयास करते हैं और रोहतास जिले के सासाराम, डेहरी, बिक्रमगंज, नासरीगंज, दावथ, नोखा तथा कोचस इत्यादि प्रखण्डों के कृशि श्रमिकों इन क्षेत्रों की ओर **आकर्शित** होते है। इस तालिका से यह भी **स्पश्ट** होता है कि यदि ग्रामीण क्षेत्रों में वैकल्पिक रोजगार की वृद्धि की जाय तो **निश्चित** रूप से कृशि मजदूर अपने जीवनस्तर की वृद्धि हेतु अन्य कार्य कर सकने की अपनी क्षमता में विकास करेंगे एवं उनके बेकारी के दिनों में व्यर्थ जाते श्रम का विकास हेतु उपयोग किया जा सकता है तथा उनमें व्यवसाय परिवर्त्तन की प्रवृत्ति विकसित की जा सकती है। कृशि कार्यों में इन श्रमिकों की निर्भरता आज भी काफी अधिक है। इसके **अनिश्चित** स्वभाव के दुश्परिणामों को दूर करने के लिये कृशि श्रमिकों की आय का 60% से 75%ः तक भाग कृशि क्षेत्र से ही प्राप्त होता है। सर्वेक्षण के दौरान यह तथ्य सामने आया है कि लगभग 25% श्रमिक परिवार सहायक व्यवसाय करते हैं, जिसका विवरण तालिका संख्या 3 में दिया गया है–

तालिका 3

रोहतास जिला के सर्वेक्षित कृशि श्रमिक परिवारों के सहायक व्यवसाय (%) में

1.	भाासकीय कार्य	2.5%
2.	नौकरी	8.2%
3.	दुकानदारी	6.5%
4.	कारीगरी	6.8%
5.	बगवानी	2.0%
	योग	25.0%

स्रोत – कार्य क्षेत्र के आधार पर

अनुभव तथा लोगों से चर्चा के बाद यह स्पश्ट होता है कि इस क्षेत्र के कृशि श्रमिक संस्थागत रूकावट, अवसर की अनुपलब्धता, पूँजी की कमी, **अशिक्षा** आदि विभिन्न आर्थिक एवं सामाजिक अवरोध के कारण व्यवसाय परिवर्तन में अक्षम है। चूँकि कृशि श्रमिकों की मजदूरी यहाँ पर सामाजिक रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं पर अधिक निर्भर है। माँग–पूर्ति के नियमों का इसके निर्धारण में कम हाथ होता है। यहाँ कृशि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति औद्योगिक श्रमिकों की अपेक्षा हीनतर है। इसके दो प्रमुख कारण हो सकते हैं– एक तो कृशि श्रमिकों को वर्श भर रोजगार नहीं मिलता, उन्हें 4 से 7 माह तक बेकार रहना पड़ता है। दूसरे उन्हें अपेक्षतया बहुत कम मजदूरी मिलती है। कुछ कृशि कार्यों के लिये कार्यानुसार तथा कुछ अन्य कृशि कार्यों के लिए समयानुसार मजदूरी दी जाती है, पुरूशों, स्त्रियों तथा बालकों को अलग–अलग दरों से मजदूरी दी जाती है।

कुछ ग्रामीण कृशि श्रमिकों के साक्षात्कार से जिले के विभिन्न भागों में ग्रामीण कृशि मजदूरी का अध्ययन किया गया है, जिससे उपरोक्त तथ्यों की **पुश्टि** होती है। औद्योगिक श्रमिक संगठित होने के कारण क्षतिपूरक महँगाई भत्ता प्राप्त करने में सफल हो सके हैं, जबकि यहाँ के असंगठित कृशि श्रमिक इस प्रकार को कोई लाभ प्राप्त नहीं कर पाते हैं। रीति–रिवाजों से बँधे समाज में मजदूरी के बढ़ने में अत्यधिक समय लगता है, जैसे 1950–51 में जिले के औसत कृशि मजदूर को मासिक 10.50 रूपये, 1960–61 में 28.00 रूपये, 1970–71 में औसत रूप से 90.50 रूपये, 1980–81 में औसत रूप से 109.60 रूपये, 1990–91 में 283.30 रूपये तथा 1999–2000 में भी मात्र 604.00 रूपये मासिक मजदूरी प्राप्ति होती है।

विभिन्न सर्वेक्षणों तथा अनुभवों से यह स्पश्ट होता है कि कृशि श्रमिक परिवारों की आय के प्रमुख तीन स्त्रोत हैं – पहला भूमि पर खेती, दूसरा कृशि श्रम और तीसरा गैर कृशि श्रम। इनकी जीविका का प्रधान आश्रय खेतिहर मजदूरी है, जिसका महत्व 1995–96 में 1950–51 की अपेक्षा बहुत बढ़ गया है। आय स्त्रोतों में भूमि पर खेती का महत्व घटकर लगभग आधे से भी कम रह गया है। दूसरे भाब्दों में प्रथम पंचवर्शीय योजनाकाल की तुलना में वर्त्तमान में कृशि श्रमिक और अधिक भूमिहीन हो गये तथा बँटाई आदि पर जो पहले भूमि मिल जाती थी उसकी मात्रा में

भी कमी हो गई। इसलिये विवश होकर यहाँ कृशि श्रमिकों को अधिक मात्रा में दूसरों के खेतों में मजदूरी पर कार्य करना पड़ता है। इससे कृशक परिवारों और विषेशतः कृशक श्रमिक परिवारों की हीन आर्थिक दशा तथा निर्धनता का अनुमान लगया जा सकता है।

जिले में कृषि श्रम परिवारों से पता चलता है कि लगभग 64% परिवार किसी न किसी प्रकार के ऋण से ग्रस्त रहते हैं। कुल ऋण राशि का लगभग 46% उपभोग व्यय के लिये 24% सामाजिक कार्यों के लिये, 19% उत्पादक उद्देश्यों के लिये तथा शेष 11% विविध खर्चों के लिए लिया जाता हैं, जो मुख्य रूप से 30% साहूकारों से, 40% मित्रों एवं सम्बन्धियों से, 15% सेवा योजकों से, 6% व्यापारिक एवं सहकारी बैंकों से, 8% दुकानदारों से तथा 1% सहकारी समितियों से लिया जाता है।

इस तरह इन उपर्युक्त वास्तविक तथ्यों से स्पश्ट होता है कि अभी भी कृषि श्रमिकों की दशा हीनतर होती जा रही है। मूल्य वृद्धि से कृषकों तथा भू.स्वामियों को लाभ हुआ है, लेकिन जीवन लागत बढ़ जाने से खेतिहर मजदूर और ऋणग्रस्त होते चले जा रहे हैं। परिवार का पालन करने के लिये उसे हर संभव विभिन्न स्त्रोतों से ऋण लेना पड़ रहा है। कुल ऋण का 70% उसे उपभोग तथा सामाजिक कार्यों के लिये लेना पड़ा है। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उसकी ऋणग्रस्तता ने उन्हें साहूकारों और खेत मालिको के चंगुल में ला दिया है और ऋण के भुगतान के लिये उनके उपर हमेसा दबाव रहता है।

कृषि श्रमिकों का व्यय विश्लेषण

सामान्यतः किसी भी परिवार द्वारा किया गया खर्च या व्यय की पूर्ति उनके परिवार के सदस्यों द्वारा अर्जित राशि से होती है और विशेष परिस्थितियों में ऋण द्वारा प्राप्त राशि से। विभिन्न मदों में की गयी खर्च की राशि का सही.सही आॅकलन एवं विश्लेषण साक्षत्कार के आधार पर किया गया है। कृषि श्रमिक परिवारों के द्वारा किया गया श्रम व्यय निम्न शीर्षकों में एकत्रित किया गया है.

(1) खाद्यान्न या भोजन, (2) कपड़े या वस्त्र, (3) मकान एवं प्रकाश व्यवस्था, (4) तम्बाकू, बीड़ी इत्यादि (5) आवागमन, (6) सामाजिक उत्सव एवं त्यौहार, (7) शिक्षा एवं स्वास्थ्य, (8) स्वयं की कृषि भूमि में खर्च, (9) ऋण का ब्याज, (10) मनोरंजन में खर्च, (11) अन्य व्यय। विस्तृत तालिका 4 में प्रस्तुत किया गया है।

जिले में कृषि श्रमिक परिवारों द्वारा जीवनापयोगी मदों में प्रति कृषि श्रमिक परिवार द्वारा वार्षिक औसत रूप से 3352/- रूपये तथा मासिक रूप से 279/- रूपये तथा 9.31 रूपये प्रतिदिन व्यय किया जाता है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक व्यय खाद्यान्न एवं भोजन के अन्तर्गत 75% खर्च किया जाता है।उसके बाद क्रमशः कपड़े पर 5% मकान एवं प्रकाश व्यवस्था 5% तम्बाकू.बीड़ी पर 3% स्वयं की कृषि पर 2% ब्याज (लिये गये ऋणों पर) 2% उत्सव एवं त्यौहार में 2% शिक्षा एवं स्वास्थ्य में 2% आवागमन में 1% तथा मनोरंजन में मात्र 1% व्यय किया जाता है।

तालिका 4

रोहतास जिला में सर्वेक्षित कृशि श्रमिक परिवारों में व्यय का विवरण (2016—2017)

क्र0	व्यय मद	प्रतिशत
1.	खाद्यान्न/भोजन	75%
2.	कपड़े	5%
3.	मकान एवं प्रकाश व्यवस्था	5%
4.	तम्बाकू, बीड़ी	3%
5.	आवागमन	2%
6.	उत्सव एवं त्यौहार	2%
7.	शिक्षा एवं स्वास्थ्य	2%
8.	कृशि पर खर्च	2%
9.	ब्याज (ऋण पर)	2%
10.	मनोरंजन	1%
11.	अन्य व्यय	1%
योग		100%

स्रोत — कार्य क्षेत्र के आधार पर

निश्कर्श

उपर्युक्त दिये गये आँकडो और तथ्यों के वि" लेशण से स्पश्ट होता है कि रोहतास जिला में कृशि श्रमिको की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनिय है, और इसका जो प्रमुख कारण मुझे समझ में आता है वह है

1. कृषि कार्यों में इनकी वर्ष भर सनलिप्त ना होना क्योंकि कृषि कार्य साल में मात्र 5 से 6 महीनों तक ही होता है बाकी समय ये लोग बेकार बैठे रहते हैं
2. इसके बाद इन लोगों में सहायक व्यवसाय की कमी है मात्र 25% लोग ही बेकारी के समय में किसी दूसरे व्यवसाय को कर पाते हैं
3. तीसरी महंगी शिक्षा है क्योंकि इनकी आमद इतनी कम होती है कि यह लोग अच्छे स्कूलों में अपने बच्चों को नहीं पढा पाते हैं और यहाँ कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का स्तर बिल्कुल निचली पायदान पर है
4. और ज्यादातर कृषि श्रमिक साहूकारों के ऋण तले दबे होते हैं जिससे उनके आय का ज्यादातर हिस्सा ब्याज में चला जाता है

तो हमें इन सभी तथ्यों पर ध्यान देकर इनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने के क्रम में आगे बढ़ना होगा।

REFERENCES

1. अग्रवाल, पी0 सी0 एवं आर0पी0 माहेश्वरी (1979): भारतीय अर्थषास्त्र, नशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।

2. भालेराव एवं मधुकर महादेव (1980): भारतीय कृशि अर्थशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, इलाहाबाद।

3. चतुर्वेदी एवं चतुर्वेदी (1983): श्रम अर्थव्यवस्था एवं श्रम समस्यायें, गोयल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली।

4. ममोरिया एवं जैन (1985): भारत का आर्थिक विकास, साहित्य भवन आगरा।

5. सिगरसए बी0एल0 (1988): श्रम अर्थशास्त्र, सरस्वती सदन,

मसूरी।

6. मामोरिया एवं दशोरा (1984): भारतीय श्रम समस्यायें, साहित्य भवन आगरा।

7. चैबेए जे0एल0 (1995): रोहतास जिले के कृषि श्रमिकों की आर्थिक दशा का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित, पीएच0डी0 शोध प्रबन्ध, गुरू घासीदास विष्वविद्यालय, बिलासपुर।

8. सिंह, यज्ञेश कुमार (1997): बिलासपुर जिले में कृषि श्रमिकों के विकास में भू.आर्थिक कारकों का अध्ययन, अप्रकाशित, पीएच0डी0 शोध प्रबन्ध, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर।